By – D. K. Singh
Guest Faculty
Deptt. of History

हर्षवर्द्धन की उपलब्धियाँ

हर्षवर्द्धन पुष्यभूति वंश का सबसे महान् शासक था। 606ई में अपने राज्यारोहण के पश्चात् उसने न केवल एक विस्तृत साम्राज्य का निर्माण किया बल्कि एक प्रशासक एवं कला प्रेमी के रूप में अपनी पहचान बनायी।

अपने राज्यारोहण के पश्चात उसने पहला पग साम्राज्य की सीमाओं को सुदृढ़ करने की ओर उठाया। इस संदर्भ में उसने सर्वप्रथम कन्नौज को गौड़ नरेश शशांक से मुक्त कराया एवं अपनी बहन राज्यश्री को विंध्य के जंगलों से लाकर सौंप दी। लेकिन शीघ्र ही कन्नौज को अपने राज्य की राजधानी बनाकर उसका शासन सूत्र अपने हाथों में ले लिया। अपने पहले सैनिक अभियान जो 606 ई से 612 ई तक चला इस दौरान उसने समस्त उत्तर प्रदेश, बिहार का पश्चिमी भाग जीत लिया परंतु वह शशांक के राज्य को नहीं जीत पाया।

612 ई के बाद हर्षवर्द्धन वलभी पर आक्रमण किया तथा वहाँ के शासक ध्रुवसेन को पराजित किया। ध्रुवसेन गुर्जर नरेश दद्द द्वितीय के यहाँ शरण ली जिसने उसे हर्षवर्द्धन से उसका राज्य दिलवा दिया। संभावना है कि इस कार्य में गुर्जर नरेश को पुलकेशिन द्वितीय की सहायता प्राप्त मिली थी। लेकिन हर्षवर्द्धन यहाँ कूटनीति से काम लिया और अपनी पुत्री से ध्रुवसेन की शादी कर दी तथा नर्मदा नदी तक का साम्राज्य सुरक्षित कर लिया क्योंकि नर्मदा के दक्षिण में पुलकेशिन द्वितीय का राज्य था। इसके पश्चात् हर्ष सिन्ध को जीता लेकिन उसे अपने राज्य में नहीं मिलाया। वस्तुतः यहाँ उसने समुद्रगुप्त के समान धर्मविजय किया। आगे उसका चालुक्य नरेश पुलकेशिन II के साथ 630 ई. से 634 ई.

बीच किसी समय युद्ध हुआ जिसमें उसकी पराजय हुई।

पुलकेशिन के विरुद्ध हर्ष की असफलता ने उसका नर्मदा नदी के दक्षिण में प्रसार रोक दिया। इसके बाद हर्ष पुनः पूर्वी भारत विजय के लिए दूसरे युद्ध अभियान पर निकल गया जिसका मुख्य लक्ष्य शशांक के राज्य को जीतना था। कोई भी साक्ष्य शशांक से उसके प्रत्यक्ष युद्ध का उल्लेख नहीं करता बल्कि विभिन्न साक्ष्यों में बिखरे पड़े संकेतों से यह ज्ञात होता है कि 640ई. तक हर्ष का शशांक के राज्य पर अधिकार हो गया था। संभव है 637ई. को जब शशांक की मृत्यु हो गई इसका लाभ उठाकर हर्ष वहाँ अपना अधिकार जमा लिया हो।

कामरूप तो आरंभ से उसका मित्र था ही कुछ साक्ष्य जैसे हर्षचरित बताता है कि नेपाल भी उसके प्रभाव में था। बाण ने शक्तिशाली पहाड़ी राजकुल की कन्या के साथ हर्ष के विवाह का संकेत किया है। ह्वेनसांग का जीवनी लेखक कश्मीर पर उसके हर्ष के प्रभाव की बात करता है जहाँ तक दक्षिण भारत का प्रश्न है कुछ इतिहासकार मयूर के सूर्यशतक के कुछ श्लोकों एवं गद्य-मञ्ज अभिलेख के आधार पर कुंतल, चोल एवं कांची पर हर्ष के विजय की बात करते हैं लेकिन साक्ष्यों के तर्कनिष्ठ पर्यवेक्षण से यह विजय किसी भी दृष्टि से सही नहीं लगता। इस उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि हर्षवर्द्धन का साम्राज्य उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में विन्ध्य पर्वत तक तथा पूर्व में कामरूप से लेकर पश्चिम में सुराष्ट्र तक विस्तृत था।

जहाँ तक हर्ष के शासन प्रबन्ध का प्रश्न है हर्षचरित एवं ह्वेनसांग के विवरण इस ओर इशारा करते हैं कि हर्षवर्द्धन एक विजेता एवं साम्राज्य निर्माता के साथ एक कुशल प्रशासक भी था। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि हर्ष ने किसी नवीन शासन प्रणाली को जन्म नहीं दिया बल्कि गुप्त शासन प्रणाली को ही कुछ संशोधनों एवं परिवर्तनों के साथ अपना लिया। अतः शासन व्यवस्था का स्वरूप राजतन्त्रात्मक था तथा राजा दैवी उत्पत्ति में विश्वास करता था। वह महाधिराज महाराजाधिराज परमभट्टारक, चक्रवर्ती, परमेश्वर जैसी उपाधियाँ धारण करता

था। वह प्रशासन का सर्वोच्च अधिकारी था साथ ही प्रधान सेनापति एवं न्यायाधीश भी था। महान उपाधियों से युक्त एवं शक्ति सम्पन्न होने के बावजूद हर्ष निरंकुश नहीं था एवं प्रत्येक क्षण प्रजा के कल्याण में व्यस्त रहता था।

सम्राट को सहायता देने के लिए एक मंत्रिपरिषद होती थी। मंत्री को सचिव या अमात्य कहा जाता था। हर्ष के समय भण्डि (Bhandi) उसका प्रधान सचिव था। उत्तराधिकार जैसे महत्वपूर्ण प्रश्नों पर मंत्रिपरिषद की राय आवश्यक समझी जाती थी। राज्यवर्द्धन की मृत्यु के बाद उत्तराधिकार के प्रश्न को लेकर भण्डि ने मंत्रिपरिषद की बैठक बुलायी थी। मंत्रिपरिषद के अलावा प्रधानसेनापति, महासंधिविग्राहक (विदेश सचिव) जैसे पदाधिकारी केन्द्रीय प्रशासन के अंग थे। परन्तु इस संदर्भ में यह विचारणीय है कि केन्द्रीय कर्मचारियों को नकद वेतन की जगह भूमिखण्ड दिया जाता था जिससे सामन्ती प्रथा को बढ़ावा मिला। हर्षचरित तथा कादम्बरी में विभिन्न प्रकार के सामन्तों का उल्लेख मिलता है जैसे - सामन्त, महासामन्त, आप्त सामन्त, शत्रु सामन्त, तथा प्रति सामन्त आदि। ये सामन्त प्रशासन में भाग लेने के साथ कर भी देते थे एवं समय-समय पर सैनिक सैन्य मदद भी करते थे। इस प्रकार हर्ष का प्रशासन कालान्तर में लोकप्रिय होने वाली सामन्तवादी प्रथा का पूर्वगामी था।

प्रशासन की सुविधा के लिए हर्ष का साम्राज्य कई प्रान्तों में विभाजित था। प्रान्तों को भुक्ति कहा जाता था। प्रत्येक भुक्ति का शासक राजस्थानीय, उपरिक, राष्ट्रीय, कहलाता था। मधुबन एवं बंसखेड़ा के लेखों में श्रावस्ती तथा अहिच्छत्र भुक्तियों का उल्लेख है। भुक्ति का विभाजन विषयों (जिला) में हुआ था जिसका प्रधान विषयपति होता था। विषय के अन्तर्गत कई पेठ (पाठक) होते थे जो आजकल के तहसीलों के बराबर थे। ग्रामशासन की सबसे छोटी इकाई थी। ग्राम शासन का प्रधान ग्रामाक्षपटलिक कहलाता था। उसकी सहायता के लिए अनेक करणिक होते थे। हर्षकालीन साहित्य एवं लेखों में - महत्तर, दौस्साधसाधनिक,

प्रमातार, भौगिक जैसे कुछ पदाधिकारियों की चर्चा है लेकिन इनके वास्तविक पद एवं कार्य के बारे में पता पाना कठिन है।

हर्षकालीन साक्ष्य अपराधों के लिए कठोर दंड के प्रावधान की ओर संकेत करते हैं। दंड मुख्यतः प्राकृतिक न्याय के उद्देश्य था। देश में शांति व्यवस्था बनाये रखने के लिए पुलिस विभाग की व्यवस्था थी। पुलिस कर्मियों का चाट या भाट कहा गया है। दंडपाशिक तथा दाण्डिक पुलिस विभाग के अधिकारी होते थे।

हर्षकालीन स्रोतों के अनुसार राज्य के आमदनी के तीन स्रोत (कर) थे - भाग, हिरण्य, एवं बलि। भाग भूमिकर था जो राज्य की आय का प्रधान साधन था। यह उपज का छठा भाग होता है था। हिरण्य कर नकद लिया जाता था जिसे संभवतः व्यापारी देते थे। बलि कर के विषय में कुछ ज्ञात नहीं है संभव है यह एक प्रकार का धार्मिक कर था। इनके अलावे भी कई छिट पुट स्थानीय कर थे जो सामन्ती व्यवस्था के अंग थे। आमदनी केन्द्रीय आमदनी को चार प्रकार से खर्च किया जाता था। उसका एक भाग धार्मिक एवं सरकारी कार्यों में दूसरा भाग राजकीय पदाधिकारियों के ऊपर, तीसरा भाग विद्वानों को पुरस्कार देने में तथा चौथा भाग विविध सम्प्रदायों को दान देने में खर्च किया जाता था। इस तरह हर्षकालीन प्रशासन कमोवेश सामन्ती लक्षण से लैश है था।

हर्ष अपने धार्मिक गतिविधियों के कारण भी लोकप्रिय है। हर्षवर्द्धन प्रारंभ में शैव एवं सूर्य का अनन्य उपासक था परन्तु कालान्तर में अपने मित्र बौद्ध भिक्षु दिवाकरमित्र एवं ह्वेनसांग के प्रभाव में आकर बौद्ध धर्म के महायान शाखा का अनुयायी बन गया। धार्मिक क्षेत्र में उसकी उपलब्धि उसके दो कार्यों को लेकर है। पहला कार्य था महायान शाखा की उत्कृष्टता सिद्ध करने के लिए कन्नौज में विभिन्न धर्मों, सम्प्रदायों तथा राजाओं की विशाल सभा बुलवाना। कहा जाता है कि इस सभा में बीस देशों के राजा अपने अनुचरों ~~के~~ ~~ते~~ एवं अपने देशों के धर्म आचार्यों के साथ तथा हजारों ब्राह्मण, श्रमण, बौद्ध भिक्षु एवं धार्मिक आचार्य शामिल हुये थे। इस सभा का प्रत्यक्ष लाभ महायान शाखा को मिला। धर्म के क्षेत्र में ~~प्रसार~~

Scanned with CamScanner

उसका दूसरा महत्वपूर्ण कार्य प्रयाग में हर पाँचवें वर्ष आयोजित होने वाले महामोक्षपरिषद के छठे अधिवेशन में उसका शामिल होना था। यह वस्तुतः महा दान समारोह था जिसमें सभी धार्मिक सम्प्रदाय के लोगों को दान दिया गया। इन सांस्कृतिक गतिविधियों के कारण हर्ष ने इतिहास में साहसी शासक के रूप में अपना स्थान बना पाया।

हर्षवर्द्धन विद्वानों का महान आश्रयदाता था। उसके दरबार में अनेक प्रसिद्ध कवि एवं लेखक रहते थे। इन कवियों में प्रमुख कादम्बरी एवं हर्षचरित के रचयिता बाणभट्ट था। बाण के अतिरिक्त सूर्यशतक के रचनाकार मयूर, विलासिनी चारण मातंग दिवाकर, शीलभद्र, एवं बौद्ध विद्वान जयदेव जयसेन भी उसके दरबार में संरक्षण पाये थे। हर्षवर्द्धन स्वयं उच्च कोटि का साहित्यकार भी था। उसने तीन उच्च कोटि का नाटक, रत्नावली, प्रियदर्शिका एवं नागानन्द की रचना की थी। गा.की. सदी के लेखक सोड्ढल ने अपनी रचना अवन्ति सुन्दरी कथा में हर्ष को कवीन्द्र की उपाधि दी है।

इस तरह हम देखते हैं कि हर्षवर्द्धन साम्राज्य विस्तार के साथ साथ प्रशासन एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में भी अपनी दक्षता सिद्ध की। यद्यपि कुछ इतिहासकार उसकी आलोचना इसलिए करते हैं कि वह अपने साम्राज्य को स्थायी न बना सका। लेकिन जब हम उसके जीवन के समग्र उपलब्धियों पर दृष्टि डालते हैं तो पाते हैं कि वह प्राचीन भारत का निर्विवाद महान शासक कहलाने का हकदार है।

— · —

P-5